FICCI

Publishing Awards

Supported by

amazon

Presented to

Sahitya Akademi

for the title

'Nagaphani Van Ka Itihaas'

Category

Book of the Year: Hindi

August 25, 2018

New Delhi

FICCI

Publishing Awards

Supported by

amazon

Presented to

Sahitya Akademi

for the title

'Nagaphani Van Ka Itihaas'

Category

Book of the Year: Hindi

August 25, 2018

New Delhi

FICCI

PUBLISHING AWARDS

Presented to

Sahitya Akademi

for the title

"Nagaphani Van Ka Itihaas"

Category

Book of the Year : Hindi

August 25, 2018
New Delhi

Dilip Chenoy
Secretary General, FICCI

साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत तमिल उपन्यास

नागफनी वन का इतिहास

वैरमुत्तु

तमिळ से हिन्दी अनुवाद

एव. बालसुब्रह्मण्यम

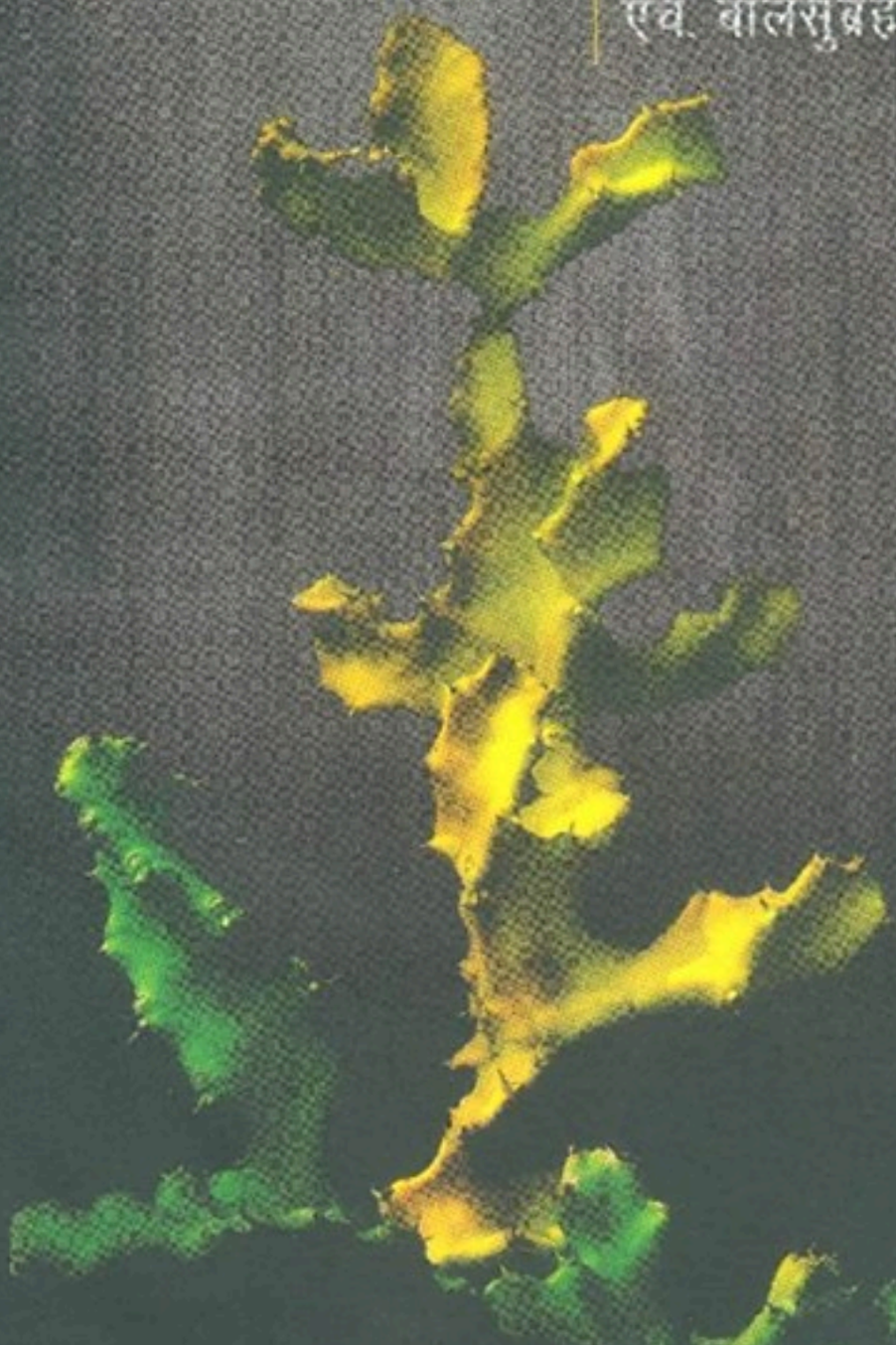

नागफनी वन का इतिहास दीसवीं सदी के विश्व भर के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों में अन्यतम एवं साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत तमिळ उपन्यास *कल्लिकाट्टु इतिहासम्* का हिंदी अनुवाद है। यद्यपि यह कृति उपन्यास शैली में रचित है, इसके लेखक वैरमुत्तु ने जान-बूझकर इसके नामकरण में इतिहास शब्द जोड़ा है। भारतीय चिंतन और परंपरा में इतिहास का अर्थ गहन गंभीर है और भारतीय संकल्पना का इतिहास निश्चित रूप से पाश्चात्य संकल्पना की 'हिस्ट्री' से भिन्न है। इतिहास वह है जिससे अगली पीढ़ियों को जीवन की शिक्षा मिलती है, मानवता की महत्ता सिद्ध होती है। नागफनी वन का इतिहास सही माने में भोले-भाले भारतीय किसान का इतिहास है जो आए दिन के अनगिनत कष्टों और चुनौतियों से जूझते हुए भी हारना नहीं जानता। प्रकृति, पर्यावरण, खेत, मिट्टी और पशु उसके लिए प्राणों से अधिक प्यारे हैं। इस उपन्यास में स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से लेकर तीन पीढ़ियों का इतिहास प्रच्छन्न रूप से चित्रित है। नाना पेय्तेवर, जो पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि हैं, आज़ादी के समय के पूर्वजों की भाँति परिश्रमी, अनपढ़ होते हुए भी जीने की कला और लोक व्यवहार में इतने कुशल हैं कि तथाकथित पढ़े-लिखे अधिकारी भी इनके व्यावहारिक ज्ञान के आगे नत हो जाते हैं। बीच की पीढ़ी के प्रतिनिधि चिन्नु जैसे लोगों को परिश्रम किए बिना फल प्राप्ति के इच्छुक के रूप में दिखाया गया है जो अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए अवैध काम करने से नहीं हिचकते। तीसरी पीढ़ी का मोक्षराजु आज की नई पीढ़ी की तरह जिज्ञासु और अध्यवसायी है।

उपन्यास का केंद्रबिंदु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पंचवर्षीय योजना के तहत मदुरै जिले की वैगै नदी पर बाँध बनाने की घटना है जिसके चलते 12 गाँवों को खाली किया जाना है। यह उपन्यास उन साधनहीन शरणार्थियों की करुण कथा का हृदय द्रावक चित्र खींचता है जिनके घर और ज़मीन पानी के नीचे डूब गए थे। लेखक उस समय ऐसे परिवार में जन्मे बालक थे जो अपने बचपन में इन सारी यातनाओं के भोक्ता और साक्षी थे। यह कहानी गाँव की भोली-भाली जनता के आँसू, खून और वेदना का दर्दनाक चित्र उकेरती है जिनके परिवार आधुनिकीकरण के नाम पर मशीनों से कुचले जाने के लिए अभिशप्त हैं।

वैरमुत्तु : (जन्म : 1953, मेट्टूर, तेनी, तमिलनाडु) आप नवयुग के अप्रतिम तमिळ कवि, संवेदनशील कथाकार, गीतकार, चिंतक तथा उत्कृष्ट निबंधकार हैं। कविता, उपन्यास, गीत, निबंध, यात्रा वृत्तांत, पटकथा तथा अनुवाद की 40 पुस्तकें प्रकाशित हैं। आपकी कृतियाँ अनेक विदेशी भाषाओं में अनूदित हैं और कई कृतियों पर शोध भी हो चुका है। आपने 7600 से भी अधिक फिल्मी गीतों की रचना की है। आप पद्मश्री, पद्मभूषण सहित साहित्य अकादेमी पुरस्कार, राष्ट्रपति से सात बार राष्ट्रीय पुरस्कार, तमिलनाडु सरकार से कलैमामणि पुरस्कार आदि अनेक पुरस्कार-सम्मान से विभूषित हैं।

एन. बालसुब्रह्मण्यम : (जन्म : 1932) हिंदी, तमिळ और मलयाळम में परस्पर अनुवाद। आपने साहित्य अकादेमी, नेशनल बुक ट्रस्ट और भारतीय ज्ञानपीठ के लिए श्रेष्ठ साहित्यकारों की रचनाओं का अनुवाद, तमिळ के गौरव ग्रंथ *तिरुक्कुरल* और प्राचीन तमिळ व्याकरण *तोल्काप्पियम्* का अनुवाद हिंदी में किया। आपको राष्ट्रपति पुरस्कार, उत्तर प्रदेश सरकार का सौहार्द सम्मान, साहित्य अकादेमी का अनुवाद पुरस्कार आदि अनेक पुरस्कार-सम्मान प्राप्त हैं।

ISBN 978-81-260-5367-4

नागफनी वन का इतिहास

Naagphani Van ka Itihas

www.sahitya-akademi.gov.in

₹ 150/-